रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर

खेल पत्रकारिता के क्षेत्र में आया व्यापक बदलाव, युवाओं के लिए संभावनाएं बढ़ीं

– पत्रकारिता विभाग, रादुविवि एवं महाकौशल क्रीड़ा परिषद के संयुक्त तत्वावधान में विश्व खेल पत्रकारिता दिवस के संदर्भ में संगोष्ठी का आयोजन का आयोजन

जबलपुर 04 जुलाई। पिछले एक दशक में खेल के क्षेत्र में एक बड़ा बदलाव आया है। गुजरे जमाने में क्रिकेट की लोकप्रियता के पीछे रेडियो हुआ करता था। लोग रेडिया पर क्रिकेट कमेंट्री सुनने के लिए दीवाने थे। अब एनालिटिक्स का उपयोग हो रहा है। खेल पत्रकारिता के कई अलग–अलग रूप हैं, खेल–दर–खेल और खेल के रिकैप से लेकर खेल में महत्वपूर्ण विकास पर विश्लेषण और खोजी पत्रकारिता तक। प्रौद्योगिकी और इंटरनेट युग ने खेल पत्रकारिता के क्षेत्र को व्यापक रूप से बदल दिया है। वर्तमान सहस्राब्दी में इंटरनेट ब्लॉगिंग और ट्वीटिंग के नए रूपों ने खेल पत्रकारिता की सीमाओं को और अधिक विस्तारित कर दिया है; ये जानकारी वरिष्ठ खेल पत्रकार और आकाशवाणी के पूर्व अपर महानिदेशक श्री राजीव शुक्ला ने सोमवार को विश्व खेल पत्रकारिता दिवस के संदर्भ में आयोजित संगोष्ठी में मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता के रूप में दी।

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के कौंसिल हॉल में संचार अध्ययन एवं षोध विभाग (पत्रकारिता विभाग) एवं महाकौशल क्रीड़ा परिषद के संयुक्त तत्वावधान में विष्व खेल पत्रकारिता दिवस के संदर्भ में "वर्तमान समय में खेल पत्रकारिता के समक्ष चुनौतियां एवं भविष्य" विषय पर आयोजित संगोष्ठी माननीय कुलपति प्रो. कपिल देव मिश्र ने अपने ऑनलाईन शुभकामना संदेश में कहा कि खेलों का मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण योगदान है। युवाओं में खेलों के प्रति रूझान बढ़ा है, ऐसे में खेल पत्रकारिता में संभावनाएं भी बढ़ीं हैं। कुलसचिव प्रो. बृजेश सिंह ने भी ऑनलाईन शुभकामना संदेश दिया। प्रारंभ में स्वागत भाषण और विषय प्रवर्तन करते हुए पत्रकारिता विभागाध्यक्ष प्रो. धीरेन्द्र पाठक ने बताया कि खेल पत्रकारिता लेखन का एक रूप है जो खेल विषयों और प्रतियोगिताओं से संबंधित मामलों पर रिपोर्ट करता है । खेल पत्रकारिता 1800 के दशक की शुरुआत में शुरू हुई जब इसे सामाजिक अभिजात वर्ग के लिए लक्षित किया गया और समाचार व्यवसाय के एक अभिन्न अंग में बदल दिया गया, जिसमें समाचार पत्र समर्पित खेल अनुभाग थे। वर्तमान में समय में यह मध्यम और निम्न वर्ग में भी लोकप्रिय है और खेल पत्रकारिता में विस्तार भी निरंतर हो रहा है।

तकनीक ने बदल दिये खेल पत्रकारिता के आयाम–

संगोष्ठी में सारस्वत अतिथि एवं वक्ता श्री पंकज स्वामी, जनसम्पर्क अधिकारी, मप्र विद्युत विभाग ने कहा कि प्रिंट स्पोर्ट्स जर्नलिज्म में गिरावट को इंटरनेट और डिजिटल स्पोर्ट्स जर्नलिज्म के उदय से जोड़ा जा सकता है। पहले डिजिटल खेल पत्रकारिता में व्यापक विषयों को शामिल किया गया था, लेकिन जैसे–जैसे समय बीतता गया और इंटरनेट अधिक व्यापक होता गया, ब्लॉगर और स्थान और टीम विशिष्ट वेबसाइटें बाजार पर कब्जा करना शुरू कर दिया। व्यक्ति के लिए इस कम लागत के साथ–साथ बहुत विशिष्ट

सामग्री की विविधता तक पहुंच बढ़ने से प्रिंट और डिजिटल की ओर भी बदलाव आया। वर्तमान समय में खेल पत्रकारिता के क्षेत्र में युवाओं के लिए महत्वपूर्ण अवसर उपलब्ध हैं।

खेलों के प्रति रूचि और भाषा की पकड़ जरूरी–

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए पं. अटल बिहारी हिन्दी विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलपति प्रो. खेमसिंह डहेरिया ने कहा कि एक अच्छा खेल पत्रकार बनने के लिए पहली शर्त उस खेल में रूचि होना जरुरी हैं। एक अच्छा खेल पत्रकार बनने के लिए भाषा में अच्छी पकड़ भी एक विशेषता है, जिसपर युवाओं को ध्यान देना चाहिए। अंत में आभार प्रदर्शन करते हुए महाकौशल क्रीड़ा परिषद अध्यक्ष एवं आयोजन संयोजक डॉ. प्रशांत मिश्र ने कहा कि खेल पत्रकारिता में केवल फिल्ड एक्टिविटी के बारे में रिपोर्टिंग पर्याप्त नहीं होती हैं. बल्कि खेल से जुड़े खिलाड़ियों टीम स्टाफ से जुड़ी स्टोरीज, रहस्य, कारनामे, निजी जीवन से एक पत्रकार को रूबरू होना पड़ता हैं। संगोष्ठी का संचालन डॉ. आशा रानी ने किया। इस अवसर पर पत्रकारिता विभाग के अतिथि विद्वान डॉ. संजीव श्रीवास्तव, डॉ. मोहम्मद जावेद, डॉ. शैलेष प्रसाद, डॉ. प्रमोद पाण्डेय, डॉ. मोहनिका गजभिये सहित सभी बीजेसी, एमजेसी, बीएएमसी, एमएएमसी छात्र–छात्राओं की मौजूदगी में अतिथियों को प्रतीक चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।